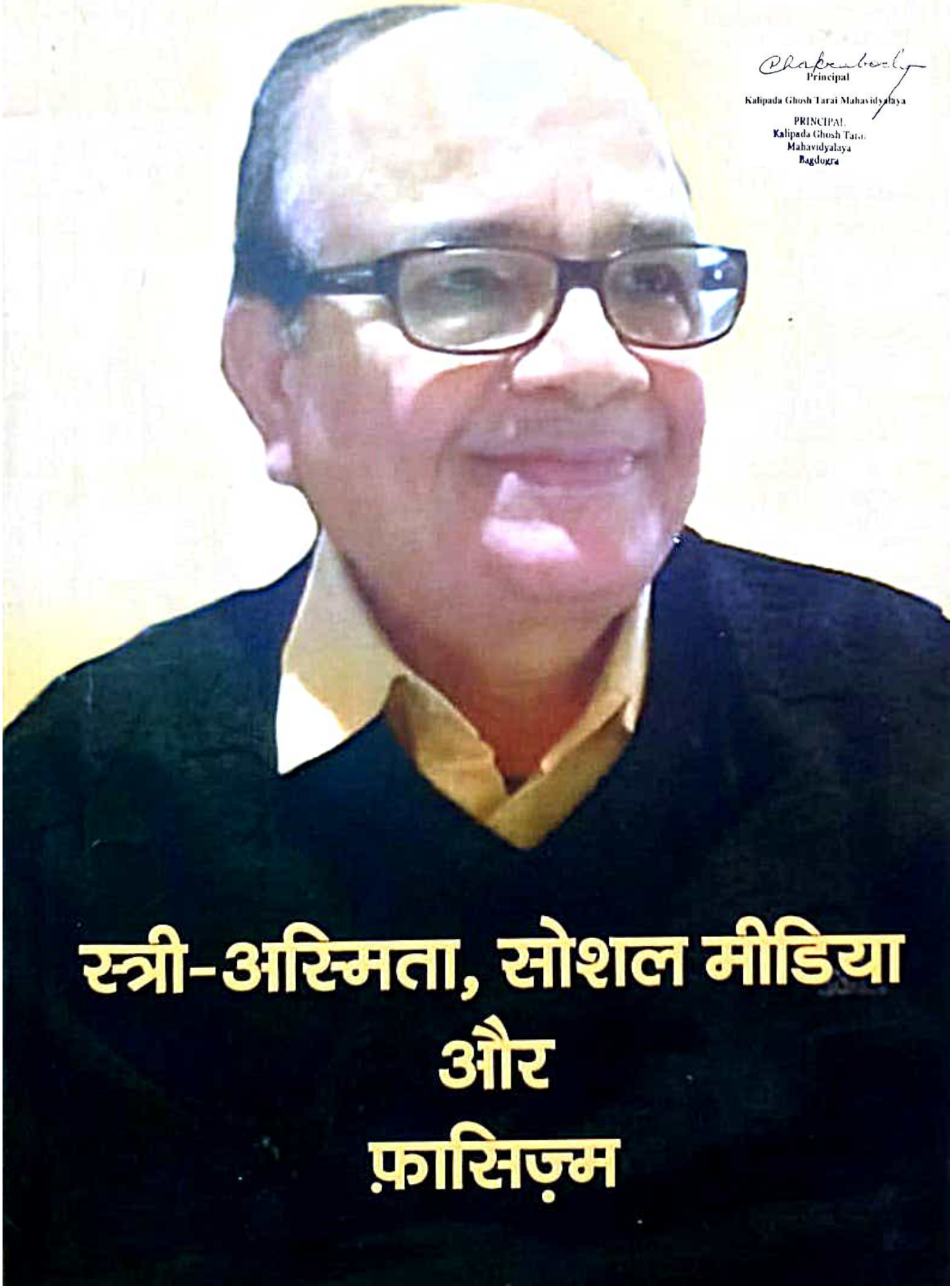

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya

PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

स्त्री-अस्मिता, सोशल मीडिया और फ़ासिज़्म

स्त्री-राजनीति का मर्म और जगदीश्वर चतुर्वेदी

-डॉ. पूनम f

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

आजादी के बाद प्रथम लोकसभा में 22 महिला सांसद रहीं। आज के समय 78 त.. हुच गई हैं। इस संदर्भ में क्या यह समझ लेना चाहिए कि भारतीय राजनीति में स्त्री-समाज अपने सरोकारों से बखूबी परिचित हैं और उसे साकार करने की दिशा में सफल एवं सार्थक भी? महिला सांसदों की उपस्थिति महिला सुरक्षा संबंधी मुद्दों के प्रति हमें सहज ही आश्वस्त करती है। इसके बावजूद यदि आज महिलाएं असुरक्षित हैं, चौतरफा हमले झेल रही हैं, तो ऐसी स्थिति में यह विचारणीय बन पड़ता है कि स्त्री-राजनीति कहां तक सत्ता-सियासत की मार्मिकता को संभव बनाए रखने में सक्षम है?

जगदीश्वर चतुर्वेदी ने सीधे तौर पर यह आपत्ति जाहिर की है- 'आजादी के बाद जिन औरतों ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम को व्यापक स्तर पर पहुंचाया और राजनीति के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर कुर्बानी भी झेलीं, उन्हीं औरतों को आजादी के बाद राजनीतिक परिदृश्य में आने का मौका नहीं मिला।' उनके लिए यह सवाल वाजिब है कि उस समय स्त्रियों की भागीदारी का राजनीतिक प्रक्रियाओं में रूपांतरण संभव नहीं हुआ। कहीं ना कहीं राजनीतिक रूपांतरण के वैचारिक संदर्भ के अभाव में स्त्रियां राजनीति में तो आईं, लेकिन अनुकूल अपेक्षाओं को साकार नहीं कर पाईं।

जगदीश्वर चतुर्वेदी जी का मंतव्य है - 'देश या राष्ट्र पुंसवाद का प्रतीक होता है। हमारे आजाद भारत के नए नक्शे में औरतों में परंपरागत औरतों को ही रखा गया। यही वजह है कि जब स्वाधीन भारत का जन्म हुआ, तो देश नया था, मर्द नया था,मध्यवर्ग नया था, मजदूर वर्ग नया था, किंतु औरत का वही पुराना रूप था, जिससे निकलकर उसने देश की मुक्ति की कामना की थी।' यह सवाल वाजिब है इस कारण से कि राजनीति में स्त्रियों की संख्या लगातार बढ़ती रही, लेकिन उनकी उपस्थिति एवं उनके सरोकार के प्रति समाज और देश का नजरिया पुरुषवादी हो बना रहा। इसी का परिणाम यह है कि आज भी राजनीति में महिलाएं संख्या में बढ़ती जा रही है, पर जिन उद्देश्यों के तहत स्त्रियों की राजनीति में बढ़त हो रही है, तथाकथित प्रगति दिख रही है, उसके परिणाम शून्य में ही घटित हो रहे हैं। इस दिशा में जगदीश्वर चतुर्वेदी ने महिला संगठनों से कई वजनदार सवाल किए हैं- 'महिला संगठनों ने आजादी के तुरंत बाद औरत को राजनीतिक तौर पर जगाए रखने का काम क्यों नहीं किया? आजादी के तुरंत बाद कांग्रेसियो, सोशलिस्ट और कम्युनिस्टों ने स्त्री-जागरण की उपेक्षा क्यों की?' आज भी संख्या मे महिला संगठन कम नहीं है, लेकिन महिला सांसदों में स्त्री समाज के प्रति वह राजनीतिक दृष्टि नहीं है, जिसके कारण महिलाएं उपस्थिति दर्ज करने के अलावा और कुछ कर ही नहीं पा रही है। इसके मर्म को परख

स्त्री-अस्मिता, सोशल मीडिया और फ़ासिज़्म

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

संपादन :
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह
डॉ. अजय कुमार साव

प्रथम संस्करण
20 फरवरी, 2020
प्रति : 1000

मूल्य : ₹ -250/-

ISBN : 978-81-921643-1-1

प्रकाशक
मुक्तधारा प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स
अमरावती, अपर रोड, गुरुंग नगर, पो. प्रधान नगर, सिलीगुड़ी-3
मो : 94340-48163

मुद्रक
मुक्तधारा प्रेस
अपर रोड, गुरुंग नगर, पो. प्रधान नगर
सिलीगुड़ी-734003, दार्जिलिंग, प.बं.